L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- III
PAPER - VIII
Psychology (Honours)
TOPIC - Watsonian secondary features Behaviourism.

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assistant professor.
Sucsh. Teacher.
V.S.J. college, Rajnagar.
Madhubani (BIHAR)
pramodkumar 2018 @ gmail.com.

वाटसन के व्यवहारवाद के कुछ प्राथमिक या औपचारिक विशेषताओं के अलावा कुछ द्वितीयक विशेषताएँ भी हैं। व्यवहारवाद के एक सम्पूर्ण एवं सम्यक ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि इन द्वितीयक विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला जाए, इन विशेषताओं को इसलिए भी जानना आवश्यक है कि वाटसन के व्यवहारवाद की अधिकतर आलोचनाएं इन्हीं से सम्बन्धित हैं। कुछ ऐसी विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

(1) भाषा विकास (Language development) वाटसन के अनुसार भाषा विकास शिशुओं के स्वाभाविक कंठ साधना या स्वरोच्चारणों तथा उत्तेजनाओं के बीच बना व्यवहार होता है। इस तरह के सम्बन्धों को अनुबंधन के नियम के क्रमिक निम्नांकित तीन तरीकों से देखा जाता है।

(i) एक शिशु कई पृथक पदों जैसे - दा, आदि को बोलता है, जब वह दा पद को बोलता है और उसे फिर सुनता है तो उसे वह फिर बोलता है। वह शब्द की ध्वनि एक अनुबंधित उद्दीपक हो जाती है जो उसे पुनरावृत्ति करने के लिए प्रेरित करती है। इस तरह से पहली अनुबंधित अनुक्रिया स्थापित हो जाती है और शिशु दा दा या, बा, बा बोलने लगता है।

(ii) परिवार के व्यस्क सदस्य जैसे - माता, पिता, दादा, भाई, बहन, आदि बच्चों के तुतलाहट वाली आवाज (जैसे - दे-दा-मा-मा, ना-ना) को उनकी उपस्थिति में दोहराते हैं। यह तुतली आवाज एक तरह का अनुबंधित उद्दीपक हो जाती है और

शिशु से वही पद दोहराने के लिए बाध्य करता है। इस तरह से - शिशु वयस्क द्वारा बोले गए पद या शब्द को बोलना सीख लेता है।

(iii) वयस्क सदस्य (Adult members) जैसे - माँ शिशु के सामने वस्तु को रख देती है तथा उपयुक्त पद को वह दोहराती है। जैसे - माँ रबड़ पुरुष का पुतला या गुड्डा (Doll) को दिखाकर उसके लिए उपयुक्त पद को बोल सकती है। कई बार दोहराने से शिशु के मन में उद्दीपक (गुड्डा या पुतला) तथा बोले गये पद के बीच में सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

स्पष्ट हुआ कि वाटसन ने अनुबन्धन के नियम के आधार पर भाषा विकास (Language development) की व्याख्या किया है। शारीरिक रूप से विकलांग बच्चे विशेषकर बहरे एवं गूंगे बच्चे भाषा विकास के एक सामान्य स्तर पर पहुँचने में असमर्थ रह जाते हैं। क्योंकि अनुबन्धन के वे विभिन्न अवस्थाएँ ठीक से हो नहीं सकती है।

(iii) चिन्तन (Thinking) - वाटसन के लिए चिन्तन एक अस्पष्ट व्यवहार (covert behaviour) है। जो मांसपेशियों गतियों या ग्रन्थीय स्रोतों से निर्मित होता है। इसकी अनुक्रिया को सीधे व्यक्ति प्रेक्षण नहीं कर पाता है। फिर भी वे व्यक्ति के स्पष्ट व्यवहार पर अधिक प्रभाव डालते हैं। जब 2½ साल की अवस्था से जब शिशु बोलना प्रारंभ कर देता है तो वह अपने बोर से जोर-जोर से बोलना प्रारंभ कर देता है। लेकिन परिवार के बड़े सदस्य उन्हें चुप-चुप करने के लिए निरुत्साहित करते हैं। परिणामतः स्पष्ट उच्चारण धीरे समाप्त हो जाता है। किन्तु वाकिन्द्रियों के सूक्ष्म मांसपेशियों में गतियाँ होती है। इससे एक तरह का उप-मुखरित बातचीत (sub-vocal talking) की उत्पत्ति होती है। जिसे वाटसन ने चिन्तन कहा है। लेकिन इस तरह के चिन्तन में वाकिन्द्रियों के पेशीय गति सम्मिलित नहीं होते हैं। वाटसन ने यह स्वीकार किया कि चिन्तन में अंगुलियों के मांसपेशियों में काफी गति होते पायी जाती है। अतः वाटसन के मत भी एक व्यक्ति के -

Scanned with CamScanner

(iii)

शरीर के अंगों मात्र तक सीमित है। हालांकि चिन्तन में मुँह होंठ जीभ तथा स्वरयंत्र में अधिक गतियाँ होती हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वाटसन के लिए चिन्तन का आधार शारीरिक पेशीय प्रतिक्रियाएँ तथा प्रवृत्तियां हैं। इसे चिन्तन का परिधीय सिद्धान्त कहा गया, बाद में (Max 1937) द्वारा किये गये अध्ययनों में भी वाटसन के इस विचारधारा की पुष्टि हुई, जैकोबसन ने अपने अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट किया कि सुप्त संभाषण के दौरान जीभ में पेशीय गति तीव्र हो जाती है उसी तरह से मैक्स (Max) ने अपने अध्ययन में पाया कि जब बहरे-गूंगे चिन्तन करते हैं तो उनके बाँह तथा हाथ में पेशीय गति अधिक हो जाती है।

(iii) वाटसन का व्यवहारवाद :- 1914 में वाटसन ने अपनी पुस्तक (Behaviour, An Introduction to comparative psychology) में सुनिश्चित व्यवहार के महत्व को स्वीकार किया और शिशु व्यवहार को आनुवंशिक माना गया। 1925 में उनकी दूसरी पुस्तक (Behaviourism) प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने मानवीय स्तर पर मूल प्रवृत्ति के संप्रत्यय को पूर्णतः अस्वीकृत कर दिया तथा पर्यावरणीय कारकों के प्रबल समर्थक हो गए। उनका मत था कि मानवीय व्यक्तित्व बहुत हद तक इस बात पर आधारित होता है कि किस तरह से पर्यावरणीय कारक व्यक्ति को प्रभावित कर रहे हैं। वाटसन के अनुसार प्रत्येक सामान्य मानव शिशु अपने आप में कुछ विशेष अर्थ: जन्मजात शक्तियों को धारण करता है। पर्यावरण उन जन्मजात शक्तियों को इस तरह से मोड़ता है कि बच्चा बड़ा होकर कुछ भी बन सकता है। या फिर कुछ भी नहीं बन सकता है। पर्यावरण के 1925 में प्रकाशित उनकी पुस्तक में उन्होंने इस प्रकार महत्व पर के कुछ शब्द कहे कि "मुझे एक दर्जन स्वस्थ बच्चे दीजिए। मैं उनमें से किसी एक को लेकर तथा उन्हें वातावरण देकर किसी भी तरह के विशेषज्ञ बनाने प्रशिक्षित करके किसी भी तरह के उसके प्रतिभा की प्रवृत्ति, की गारंटी लेता हूँ। मैं उसके पूर्वजों एवं क्षमता के पेशा, क्षमता, प्रवृत्तियाँ, पूर्वज एवं उसे एक डाक्टर, स्वाभाविक किये बिना ही उसे एक डाक्टर,

वकील, कलाकार, व्यापारी और यहाँ तक चोर तथा भिखारी भी बिना बुद्धि का बना सकता हूँ,
अपने विभिन्न अध्ययनों के आधार पर वाटसन (Watson) ने यह निष्कर्ष दिया कि वयस्क व्यक्तित्व असामान्यताएँ का मुख्य कारण बाल्यावस्था की प्रशिक्षण का दोषपूर्ण होना है। किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को उसके उत्तम वातावरण में रखकर उन्नत किया जा सकता है। इस आधार पर वे सामाजिक उन्नति के लिए एक कार्यक्रम (programme) तैयार किया जिसे व्यावहारिक आचारशास्त्र कहा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यवहारवादी नियमों एवं सिद्धान्तों के आधार पर पुनःशिक्षा तथा पुनर्बलन के माध्यम से प्राप्त करना है।

(ग) नियतिवाद – वाटसन यह मानते थे, कि व्यक्ति अपने कार्यों के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होता है क्योंकि उसकी अपनी स्वतंत्र इच्छा होती है। इसके विपरीत उनका यह कहना कि मानव व्यवहार कुछ बाह्य कारकों द्वारा निर्धारित होता है। न कि यह स्वतंत्र इच्छा का प्रतिफल होता है। वाटसन के इस विचारधारा का अपराधी व्यवहार के अध्ययन में विशेष रूप से उपयोग किया गया, ऐसे व्यवहार को पुनः अनुबंधन द्वारा पुनः निर्धारित किया जा सकता है। तथा उनकी पुनःशिक्षा भी संभव है। ताकि अपराधी व्यवहार सामाजिक नियंत्रण का एक मुख्य भाग हो सके।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date- 24/04/2020
Sub- Psychology

Scanned with CamScanner